संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२० ● अंक : ४८ ● ०८ दिसम्बर, २०१५ मार्गशीर्ष कृष्ण द्वादशी सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

देश में बढ़ती अराजकता के विरुद्ध सभी आर्यजन जन जन में जागृति लायें

-देवेन्द्रपाल वर्मा

आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा ने प्रदेशवासियों के नाम एक संदेश में कहा है कि आज सर्वत्र अराजकता का प्रसार हो रहा है। अराजकता राष्ट्र को विनाश के पथ पर ले जाती है। हम सभी आर्यजनों को संकल्पबद्ध होकर उसका मुकाबला करना होगा। पराधीनता के काल में महर्षि दयानन्द का अभ्युदय हुआ था जिन्होंने पराधीनता की बेड़ियों में जकड़े भारत को मुक्त कराकर सुखी समृद्ध और संगठित राष्ट्र बनाने का स्वप्न संजोकर आर्यसमाज की स्थापना की थी।

उन्होंने पराधीनता के मूल में विभिन्न रूढ़ियां जाति पांति के भेद, नारी का शोषण छुआछूत के भेद, मत-मतान्तरों के भेद को पाया और इसके विरूद्ध आवाज उठाई उन्होंने उद्घोष किया कि सम्पूर्ण मानव जाति एक सूत्र में बंध कर ही राष्ट्र व विश्व का कल्याण कर सकती है। यह बुराइयां हमारे वेदपथ से भटक जाने से आई है इसलिए हम सभी वेद को जाने पढ़ें जीवन समाज राष्ट्र विश्व को संवारे क्योंकि वेद ही परमपिता का सारे विश्व के संचालन का एक संविधान है।

महर्षि ने कहा कि आर्य समाज कोई मत सम्प्रदाय नहीं। एक आंदोलन है जिसके माध्यम से जन जन में जागृति लायें। विकार मुक्त समाज बनाये। आन्दोलन तीव्र गति से चला जन जन में चेतना आयी। स्वराज्य आन्दोलन चला। देश स्वतंत्र हुआ। स्वाधीनता के बाद अपनी सरकार बनी। अपना संविधान बना। हमारे राष्ट्र नेताओं ने देश को समृद्ध, धन धान्य से पूर्ण बनाने में अपना सम्पूर्ण ध्यान लगा दिया। अनेक उद्योग बढ़े, वैज्ञानिक प्रगति हुई परंतु जिस अंग्रेजी शिक्षा से यह सारे दोष हमारे अंदर आये थे उसमें परिवर्तन नहीं किया। अंग्रेजी शिक्षा में नैतिकता, सच्चरित्रता का कोई पाठ नहीं है फलतः भौतिक प्रगति तो हुई परंतु मनुष्यों में नैतिकता का ह्रास होने लगा। नये नये ढंग से वे सभी बुराइयां समाज में फैलने लगी। आज देश में दबंगई बढ़ रही है, उच्छृंखलता बढ़ रही है, अराजक तत्व पनप रहे हैं, उन पर कोई अंकुश नहीं लग रहा। राजनीति में अपना अपना प्रभुत्व पाने व बनाने के लिए राजनेता उनका आश्रय प्रच्छन्न रूप में ले रहे हैं इसलिए कोई नियम कानून उनको नहीं रोक पा रहा है।

इसलिये आर्य समाज के सुधार आन्दोलन की आज पहले से भी अधिक आवश्यकता है। अतः सभी आर्यजन इस पर गंभीर चिन्तन करें और संगठित व सौम्य मन से महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को अपने कथन व वक्तव्यों से जन जन में जागृति लायें। अराजक वृत्तियों का समूल उन्मूलन करने का संकल्प लेकर कार्यक्षेत्र में उतर कर महर्षि के सपनों का भारत बनाने का व्रत लें। हमारा निष्पृह संगठित प्रयास सफलता लायेगा। अराजक वृत्तियां नष्ट होंगी। सबमें प्रेम व्यवहार बढ़ेगा और महर्षि के सपनों का भारत हम बनाने में सफल होंगे। प्रेम व्यवहार बढ़ेगा।

वेदामृतम्

यावयद्द्वेषा ऋतपा ऋतेजाः सुम्नावरी सूनृता ईरयन्ती।
सुमंगलीर् विभ्रती देववीतिम् इहाघोषः श्रेष्ठतमा व्युच्छ।।

(उषः) हे उषा! (यावयद्-द्वेषा) द्वेषों की पृथक कर्त्री (ऋतपाः) सत्य की पालयित्री (ऋतेजाः) सत्यजाता, (सुम्नावरी) सुखमयी (सूनृताः ईरयन्ती) प्रिय सत्य वाणियों की प्रेरिका, (देववीर्तिं विभ्रती) यज्ञ की धारयित्री (श्रेष्ठतमा) श्रेष्ठतम (तू) (इह) यहां (अद्य) आज (वि-उच्छ) तमस् का विवासन कर उद्भासित हो।

हे उषा! तुम अंधकार का विवासन करती हुई गगन में चमको। चमकती तो तुम प्रतिदिन स्वयं ही हो पर हम प्रार्थना इसलिए कर रहे हैं कि तुम हमारे जीवनों में भी चमको। जैसे तुम अंधकार को विछिन्न करती हो, वैसे ही हमारे जीवनों से द्वेष भावों को विच्छिन्न करो। क्योंकि संसार में मच रही समग्र अशांति को उत्पन्न कराने वाले ये पारस्परिक द्वेषभाव ही है।

डा. रामनाथ वेदालंकार

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. द्वारा प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को निर्देश

गौ हत्या के विरूद्ध कठोर कानून बनाने के लिए केन्द्र सरकार को ज्ञापन भेजें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली की समस्त आर्य समाजों व संबंधित शिक्षा संस्थाओं की ओर से आगामी १६ दिसम्बर २०१५ को प्रातः १० बजे से २ बजे तक जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली पर गौहत्या एवं गौमांस निर्यात के विरूद्ध तथा लोकसभा में कांग्रेज नेता श्री मल्लिकार्जुन द्वारा दिये बयान कि आर्य बाहर से आये थे के विरूद्ध रोष प्रकट करने के लिए धरना प्रदर्शन करने का निश्चय किया है और इसके विरूद्ध कठोर कानून बनाने के लिए राष्ट्रपति महोदय एवं प्रधानमंत्री जी को विशेष ज्ञापन दिया जायेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. अपने प्रदेश की सभी आर्य समाजों को निर्देशित करती है कि प्रदेश की सभी आर्य समाजें भी अपने अपने जिला केन्द्रों पर १६ दिसम्बर १५ को धरना प्रदर्शन आयोजित करके राष्ट्रपति एवं माननीय प्रधानमंत्री जी के नाम अपने अपने जिलाधिकारी महोदय के माध्यम से गौ हत्या के विरूद्ध कठोर कानून बनाने की मांग का ज्ञापन सौंपने की व्यवस्था करें।

देवेन्द्र पाल वर्मा
प्रधान

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

सम्पादकीय.....

भोगवादी जीवन शैली से मानवता क्षीण हो रही है

अंग्रेजों ने धूर्तता से भारत में अपना शासन किया हमें सदा अपना गुलाम रखने के लिए हमारी शिक्षा पद्धति हमारा इतिहास लार्ड मैकाले की कुटिल चाल से बदल डाला। भारत कभी विश्व गुरू था सारे विश्व के शिक्षा पिपासु हमारे देश आकर विद्वज्जनों से शिक्षा प्राप्त करके अपनी ज्ञान पिपासा शान्त करते थे। परंतु आज हम शिक्षा के लिए विदेशों की तरफ निहार रहे हैं। विदेशों से प्राप्त शिक्षा की डिग्रियां हमें कीमती बनाती है। यहां प्रचलित शिक्षा हमें आजीवन नौकर बनकर जीने की प्रेरणा देती हैं। रोजी रोटी ही शिक्षा का उद्देश्य रह गया है। योग्यता नहीं डिग्री से ही रोजी रोटी पाने की व्यवस्था अधिकृत हो रही है। देश में शिक्षा संस्थान अपरिमित संख्या में खुले हुए है परंतु शिक्षा का मूल वहां तिरोहित हैं। एक से बढ़कर एक डिग्रियों की संख्या बढ़ रही है। डिग्रियों से ऊँचे ऊँचे पदों पर पहुंचने का सुयोग मिल रहा है। परंतु उत्तरोत्तर जनमानस भोगवादी होता जा रहा है। भोगपूर्ति के लिए धन की आवश्यकता सर्वाधिक होती है। राष्ट्रोत्थान के नाम पर तमाम विभाग व पद बन गये है परंतु राष्ट्र उत्त्थान शून्य है। राष्ट्रोन्नति के लिए प्रत्येक नागरिक का अपने राष्ट्र के लिए समर्पण भाव आवश्यक होता है। परंतु इस गुलामी की अंग्रेजी शिक्षा से हमारे अन्दर वह नहीं उत्पन्न हो रहा है। राष्ट्र के स्थान पर अपना हित मान्य हो रहा है।

आज सारे देश में मानवता का क्षरण और अराजकता की प्रधानता हो रही है। अराजकता राष्ट्र को विनष्ट करती है। मानवता ही राष्ट्र के सम्वर्धन का मुख्य साधन है। मानवता के संरक्षण और संवर्धन के लिए हमारे देश में भारतीय शिक्षा पद्धति ही सहायक बन सकती है। क्योंकि भारतीय शिक्षा में नैतिक गुणों की प्रधानता है। केन्द्र सरकार को अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था को अविलम्ब हटाकर भारतीय शिक्षा पद्धति चलाने के लिए शिक्षा समिति का गठन करना चाहिए। उस शिक्षा समिति में योग्य राष्ट्रभक्त विद्वानों शिक्षा शास्त्रियों को सर्व शिक्षा सुधार के लिए गंभीरता से चिन्तन और मनन करके वर्तमान काल के लिए शिक्षा व्यवस्था करनी चाहिए। विश्व में अनेक वैज्ञानिक शोध हो रहे हैं नये नये आयुध बन रहे हैं। हमारे देश में भी वे सभी कार्य हों इस शिक्षा का शिक्षार्थियों को पूर्ण अवसर हमारी शिक्षा व्यवस्था से हो। हमारे प्राचीन ज्ञान भंडार में वह आदिकाल से ही समाविष्ट है। विद्वान शिक्षा शास्त्री उस भण्डार से गंभीरता से मंथन करके उस ज्ञान को प्रसारित करने के लिए नयी शिक्षा पद्धति में उसका पूरी तरह से समावेश करें। हमारी संस्कृति का मूल नैतिकता है। विद्वान शिक्षा शास्त्री नयी शिक्षा व्यवस्था में पाठ्यक्रम में प्रारम्भिक कक्षाओं से स्नातकोत्तर कक्षाओं तक उसको प्राथमिकता दें।

नैतिक शिक्षा मानवीय जीवन का सूत्र धर्म है। सभी राजनीतिश्र शिक्षा शास्त्री धर्म के मर्म को उसके अर्थ को गंभीरता से समझने का प्रयत्न करें। धर्म शाश्वत है कभी भी बदल नहीं सकता, धर्म का सीधा अर्थ कर्तव्य है। मत सम्प्रदाय यह धर्म नहीं है वह अपने विचार है उनमें समयानुसार परिवर्तन हो सकता है इसलिए मत सम्प्रदायों की विरोधाभासी बातों को धर्म कहकर धर्म को तिरस्कृत करने का उपालम्भ न करें।

इस प्रकार जब विद्वान विचारक चिन्तन और मनन करके राष्ट्र कल्याण के लिए शिक्षा व्यवस्था बनायेंगे और अंग्रेजी शिक्षा का व्यामोह छोड़कर भारतीय शिक्षा व्यवस्था चलायेंगे तभी शिक्षण प्राप्त करने वाले सुयोग्य नागरिक बनकर देश की उन्नति की ओर ले जाने में समर्थ होंगे। कोई भी भाषा तिरस्करणीय नहीं है सभी भाषाओं व संस्कृति का ज्ञान सभी को प्राप्त करना चाहिए परंतु अपनी भाषा व संस्कृति पर सभी को गर्व होना चाहिए। अंग्रेजी व अंग्रेजियत ने हमारे उस गर्व को क्षीण कर दिया है इसलिए हम सरकार से भारतीय शिक्षा पद्धति देश में अनिवार्यतः लाने का अनुरोध करते हैं। निःसन्देह उस शिक्षा व्यवस्था से हमारा चारित्रिक सुधार होगा। भोगवादी संस्कृति पर अंकुश लगेगा और मानवीय गुणों का विकास होगा। मानवता का अभ्युदय होगा और भारत देश पुनः विश्वगुरू पद को पाने का अधिकारी होगा।

-सम्पादक

मुक्ति का मार्ग अणु पन्था

डा. सोमदेव शास्त्री

कोई भी मार्ग अणु हो तो यात्रा भी सरल व सुगम हो जाती है। यदि मार्ग टेढ़ा हो, संकरा हो तो यात्रा भी कठिन हो जाती है। यात्रा केवल मार्ग सरल होने पर ही निर्भर नही करती, यात्रा तो यात्री पर भी आधारित रहती है। यदि यात्री कमजोर, रोगी, निरूत्साही और प्रमादी है तो वह ऋणु - सरल मार्ग पर भी यात्रा नहीं कर सकता और इसके विपरीत यदि यात्री बलवान, स्वस्थ, उत्सही और उद्यमी है तो मार्ग भले ही टेढ़ा, संकरा और कठिन हो तो भी यात्री अपने गन्तव्य को प्राप्त कर ही लेता है।

आज बहुत से बलहीन, मानसिक व शारीरिक रूप से अस्वस्थ निरूत्साही प्रमादी मतानुयायी यह दम्भ करते हैं कि हम परम लक्ष्य तक पहुंच गये हैं और जो हमारा शिष्य बनेगा उसे भी परमात्मा तक पहुंचा देंगे। उनका यह कथन मिथ्या प्रलाप मात्र है। क्योंकि शास्त्र कहता है- नायमात्मा बलहीनेन लभ्यो न च प्रमादात्तपसो बाध्यलिंगात्।।

यह आत्मा बलहीन अर्थात् शारीरिक मानसिक बौद्धिक व आत्मिक बल से हीन व्यक्ति को प्राप्त नहीं हो सकता, न प्रमादी को और न ही लक्ष्यहीन तप करने वाले को। यदि हम इस शास्त्र वचन पर विचार करे तो पता लगता है कि इन मतानुयायी गुरूओं के पास वह वस्तु है ही नहीं जिसको परमात्मा कहते हैं। वह वस्तु तो वेदपथानुगामी ऋषियों के पास हैं।

इस मोक्ष मार्ग को ऋषियों ने अणुपंथा कहा है - ''अणु पंथा महर्षि दयानन्द इसका अर्थ करते हैं-''मुक्ति का जो मार्ग है सो अणु अर्थात् सूक्ष्म है'' यहां महर्षि ने मुक्ति के मार्ग को अत्यन्त सूक्ष्म कहा है। यह सूक्ष्मता कौन सी है इस पर विचार करते हैं।

अणु- सूक्ष्म, बारीक पतला आदि ये अर्थ अणु के लोक में देखे जाते हैं। पन्था- मार्ग, रास्ता, सड़क, पगडण्डी आदि पंथा के अर्थ है। यदि हम अणु पंथा का अर्थ सीधा लेंगे तो अर्थ बना संकरा रास्ता अब इस अर्थ से काम न चलेगा। इसका लक्षण में लेंगे तो ठीक आयेगा, संगत व सार्थक होगा। इस प्रकार अणुपंथा का अर्थ होगा अत्यन्त सूक्ष्म अर्थात् मुक्ति का विषय है वह अत्यन्त कठिनता से बुद्धिगम्य है। शुद्ध अन्तःकरण से ग्रहण करने योग्य है।

इन्द्रिय और इन्द्रिय के विषय को समझना, मन को समझना, बुद्धि को जानना कि वह क्या वस्तु है मेरे लिए कैसे कल्याणकारी सिद्ध हो सकती है, यह देखना विचारना कठिन है। प्रायः व्यक्ति थोड़ी बहुत संध्या करके, पूजा-पाठ अथवा मंदिरों व तीर्थो का अटन करके आजकल के नामधारी गुरूओं का शिष्य बनकर सोचते हैं कि हम मुक्ति के मार्ग पर है। यह सोचना उनका एक भ्रम मात्र है। क्योंकि शास्त्र इसको मुक्ति का मार्ग नहीं कहता, शास्त्र तो कहता है कि जिसका अन्तःकरण शुद्ध है और जो अन्तःकरण को शुद्ध करने में लगे हैं वे लोग मोक्ष के अधिकारी और मोक्ष मार्ग के पथिक है।

जब व्यक्ति अपनी शारीरिक क्रियाओं को अर्थात् यह देखता है कि मेरा उठना, बैठना, चलना किस प्रकार का है मेरे मुखमण्डल के भाव कैसे हैं ये सब ऋषियों के तुल्य गंभीर है या नहीं। मैं शरीर हिंसा चोरी आदि तो नहीं करता। इस मार्ग का पथिक अपनी वाणी के व्यवहार को देखता है कि मैं कहां कहां बिना प्रलोभन के बोलता हूँ कहां असत्य भाषण कर बैठता हूँ, असत्य भाषण क्यों करता हूँ, कब द्वेष से मुक्त होकर वाणी से अप्रिय वचन बोल देता हूँ। इसी प्रकार मन का विश्लेषण करता है कि मेरे मन में कब कैसे कैसे भाव उठते हैं। क्या देख सुनकर मेरे मन में कैसी प्रतिक्रियाएं होती हैं। इन शारीरिक, वाचनिक, मानसिक व्यवहारों को देखकर जो इनमें अधर्मपूर्वक व्यवहार है उन सबको छोड़ना और जितने धर्मयुक्त व्यवहार है इन सब को करना है तब उसका अन्तःकरण शुद्धि की ओर चल पड़ता है। सांसारिक इच्छाओं को छोड़ केवल ईश्वर इच्छा में चलना, परमेश्वर की इच्छा, आज्ञा को पहचानना, ऋषियों के मन्तव्यों को ठीक ठीक समझना, उन मन्तव्यों के अनुकूल अपना व्यवहार करना ये बड़ा कठिन काम है। कदाचित इसी कठिनता को देखकर ऋषियों ने मुक्ति के मार्ग को अणु पंथा कहा है।

इस अणुपंथा पर तो ऋषि दयानन्द जैसे धीर समुद्र के तुल्य गंभीर अतुल्य ब्रह्मचर्य के बल से ओत प्रोत सतत उत्साही व्यक्ति चलते हैं। जबसे महर्षि ने गृह त्याग किया तब से लेकर अन्तिम क्षणों तक सत्य पर ही चलते रहे। महर्षि ने जयपुर राज्य में शैवमत का प्रचार किया और इतना किया कि वहां के स्त्री पुरूष तो क्या हाथी घोड़ो तक को रूद्राक्ष पहना डाले, यह केवल वैष्णव मत को दबाने के लिए था। कुछ काल पश्चात किसी ने ऋषि से यह पूछा कि महाराज आपने ऐसा क्यों किया तो सत्याग्रही ऋषि ने कहा कि वह हमारी भूल थी, हमें ऐसा नहीं करना चाहिए था। क्योंकि मोक्षपथ मार्गी कभी कूटनीति, अन्याय, अधर्म का आचरण नहीं करता यदि उससे अज्ञान के कारण ऐसा हो जाता है और उसको पता भी लग जाता है कि मुझसे भूल हुई है तो वह उसको तत्काल छोड़ देता है।

मोक्षपथ का यात्री व्यवसायी के तुल्य हो जाता है। जैसे व्यवसायी धन का संचय करता रहता है, अधिक से अधिक धन संचय कैसे हो इसके विषय में सोचता रहता है वैसे ही मोक्षमार्गी धर्म संचय करता रहता है, अधिक से अधिक धर्म संचय कैसे हो यह विचार करता है। आइये हम भी धर्म संचय कर मोक्षमार्गी बनें।

सोमदेव

ऋषि उद्यान, अजमेर

धरोहर.....

गुरूकुलों के कुलपिता : (श्री कृष्णलाल जी सिक्का)

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

गुरूकुल गौतम नगर, नई दिल्ली का चतुर्वेद पारायण यज्ञ चल रहा था। अचानक एक कारगाड़ी आकर रूकी और एक सज्जन उतरकर आचार्य हरिदेव जी के कक्ष की ओर चले गये। आपको देख सहसा मन में एक भाव पैदा हुआ कोई सरकारी आफिसर है। मोटी-मोटी आंखे, गंभीर मुद्रा लेकिन चेहरे पर सौम्यता, लम्बा शरीर, आधुनिक वेशभूषा से सुशोभित आंखों पर चश्मा देखकर प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित होता था। मैं भी उनमें से एक हूँ। आपको देखते ही कक्ष में प्रवेश करते हुए को सभी ने श्रद्धा से खड़े होकर अभिवादन किया और यथास्थान बैठ जाने के उपरांत मन में जिज्ञासा बनी रही कि ये कोई अधिकारी है अथवा मंत्री है। पानी लेने के बाद कार्यक्रम के बारे में जब पूछा तो आचार्य श्री हरिदेव जी ने कहा ऐसा है, आदरणीय सिक्का जी कि अध्यक्षता तो आपको ही करनी है और जो भी वक्ता हैं वे बोलते रहेंगे तथा अन्य सन्यासी आ रहे हैं तब मुझे स्मरण आया कि आदरणीय सिक्का जी वहीं है जो इस गुरूकुल के नहीं अपितु इस न्यास द्वारा संचालित एवं इस संस्था से संबंधित सभी गुरूकुलों के आप कुलपिता हैं। बड़े उदारमना हैं, याज्ञिक परिवार है, दैनिक यज्ञ होता है और अपना जंगपुरा विस्तार वाली पूरी कोठी स्वामी श्रद्धानन्द जी की तरह वेद प्रचार एवं यज्ञ के लिए समर्पित कर दी है। मुझे आचार्य श्री ने पहले जो बताया था वह सारा दृश्य आंखों के सामने आ गया और मैं उस भव्य मूर्ति को देखता रहा। कैसी सौम्यता प्रदान की है प्रभु ने। अहंकार शून्यता के जीवन से इन्होंने कैसा सुन्दर सोने पर सुहागे जैसा रूप देखकर आत्मीयता के भाव जागृत हो गए और देखकर लग रहा था कि पिछले जन्म के कोई त्यागी, तपस्वी सन्त हैं। किसी भी प्रकार की चंचलता, चालाकी, अभिमान दिखाई नहीं देता। परमात्मा के सद्गुणों को एक ही शरीर में संग्रहीत कर दिया है। आचार्य श्री के भी पिछले जन्म के अच्छे संस्कारों का सुपरिणाम था जो ऐसे देवतुल्य कुलपिता के सानिध्य में रहकर वेद प्रचार एवं यज्ञों की परम्परा का संचालन कर उसके लिए जीवनदानी, वेदपाठी, ब्रह्मचारी, विद्वान तैयार कर रहे हैं।

यह प्रथम परिचय था। सम्मेलन में साथ-साथ रहे। मैंने भी अपना परिचय देना चाहा, तो मेरे भावों को समझकर आचार्य श्री हरिदेव जी ने स्वयं ही बताना प्रारम्भ कर दिया कि ये हमारे छोटे भ्राता जी है और उ.प्र. में गाजियाबाद जिले में गंगा किनारे गढ़मुक्तेश्वर के पास अपना एक ओर गुरूकुल पूठ है, उसमें भी आपको चलना है। तो बोले सुना तो नाम बहुत दिनों से है और आपको मैं काफी समय से जानता हूँ पर कभी बातें नहीं हुई और आचार्य जी ने भी नहीं बताया कि पूठ गुरूकुल भी हमारा है। तब मैंने कहा कि ये ही तो उसके प्रबंधक है, मालिक है। सारी व्यवस्था ये ही तो करते हैं, तो बड़े प्रसन्न हुए और कहने लगे कि फिर तो जरूर चलना है। एक संस्था हमारी उ.प्र. में और है, उसे आप जानते हैं। मैंने बताया कि जानता हूँ। पूज्या माता जी सिक्का जी का आशीर्वाद और आपका स्नेह उस संस्था को बढ़ा रहा है। फिर वे चलने लगे तो मैंने फिर याद दिलाया तो बोले कि भाई यह सब आचार्य जी पर निर्भर है। जब ये चाहेंगे हम तभी चल पडेंगे, कहते हुए गाड़ी में बैठकर चले गये। तब से लेकर जब भी गुरूकुल में कार्यक्रम होता है तो मिलने पर यही कहते पाया कि आचार्य जी क्षमा करना अभी प्रभु की इच्छा से संयोग नहीं बन पा रहा है मौका लगेगा तो जरूर चलेंगे। इस बार भी देहरादून में जून में ऐसा ही कह रहे थे और आचार्य जी से कहा कि इस बार जब भी चलो मुझे साथ लेकर जरूर चलना। लेकिन जब पत्र पत्रिकाओं में पढ़ा कि वे तो चले गये, वृन्दावन की यात्रा उनकी भावनाओं की और जीवन की अंतिम यात्रा बन गई और ऐसे पथ के पथिक बन गए जिस पथ पर शूरवीर जाते हैं, जिस पथ पर योगीजन योग यात्रा से अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं ऐसे ही सिक्का जी ने अपनी यात्रा का भी सिक्का सभी आत्मीय एवं आर्यजनों, विद्वजनों के हृदय पर जमा दिया कि वे कितने सरल व्यक्तित्व के धनी थे, कितने सादे थे कितने पवित्र भावों के मालिक थे जो वृन्दावन की ओर यात्रा करने का अन्त में उन्हें सौभाग्य प्राप्त हो गया। यदि पौराणिक विचारधारा के होते तो प्रसिद्धि हो जाती कि कृष्ण भगवान के दरबार में जाने के लिए प्रभु ने ऐसी व्यवस्था की है। लेकिन हम आर्य विचारों वाले यह तो कह सकते हैं कि गुरूवर प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द जी की कुटिया से निकल कर जैसी भावना संकल्प गुरूवर महर्षि दयानन्द जी ने लिया था कि मैं वेदों का प्रचार प्रसार करूँगा, संभवतः ऐसे ही संकल्प लेने वहां जाने का मन बनाया हो और बचे जीवन को इधर आकर वेद प्रचार के लिए समर्पित करना चाहते हों। वैसे इस जीवन में वे दक्षिण दिल्ली प्रचार मण्डल के अध्यक्ष निरन्तर पिछले कई वर्षो से चल रहे थे और जहां भी कार्यक्रम होता जाते थे और पूरा सहयोग करते थे अर्थात् तन-मन-धन से वेद प्रचार के लिए सर्वात्मना रूपेण समर्पित थे। उनके जीवन में धर्म साक्षात रूप में प्रतिष्ठित हो गया था। रोम-रोम में महर्षि दयानन्द प्रभाव स्थापित हो गया था। श्रीमती माता कान्ता सिक्का जी का सहयोग धर्मपत्नी के रूप में मिलना उनके लिए सोने पे सुहागा का काम था। आप कभी भी माता जी के पास जाये तो लक्ष्मी स्वरूपा बनकर सदैव दान करती है। यज्ञ करके प्रतिदिन अपनी आत्मा को बलवती बनाकर उसके संगठन को सुदृढ़ करती रहती है। आर्यमित्र जी एवं पुरूषोत्तम जी जैसे सहयोगी आत्मीयता से संगठन में सक्रिय सहयोगी हैं, यह उनका सौभाग्य है। आपके सुपुत्र सदैव आज्ञानुवर्ती होकर आपके प्रत्येक कार्य को आगे बढ़ाने में प्रसन्न मन से अहर्निश लगे रहते हैं। ऐसे सुपुत्र परमात्मा सभी आर्यो को प्रदान करें, जो अपने पिताजी के सम्मान की सुरक्षा में सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। पूज्या माता जी का सौम्य स्वभाव एवं धार्मिक आस्था यज्ञों के प्रति निष्ठा दान के प्रति प्रसन्नता एवं सदैव गंभीर भाव से अपनी आभा से सभी को प्रभावित करती है। ऐसे धार्मिक जीवन में यज्ञों का ही प्रभाव है जो इतने भयंकर कष्ट में भी पूर्ण संयम एवं सहनशीलता का परिचय दिया है। महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि 'ईश्वर की स्तुति प्रार्थना, उपासना करने से आत्मा की शक्ति का विकास होता है और बड़े से बड़े दुख को भी सहन करने की क्षमता प्राप्त हो जाती है। उसका साक्षात् प्रमाण माता सिक्का जी के जीवन में देखने को मिला है। गुरूकुल गौतमनगर हो अथवा मंझावली या देहरादून सभी जगह जाकर माता सिक्का जी ने श्री सिक्का जी के नाम को यशस्वी बनाने के लिए दान के रूप में भरपूर सहयोग दिया है।

आपका जन्म १६३३ ई. में झंग यधियाना ग्राम में (जो इस समय पाकिस्तान में आता है) हुआ था आपके पिता जी का नाम श्री किराया लाल जी सिक्का था। आपकी पूज्या माता जी का नाम पार्वती देवी था। आपने प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम में ही प्राप्त की। देश का विभाजन का दुख देखना पड़ा और आप परिवार के साथ दिल्ली में ही आ गये। दरियागंज स्थित डी.ए.वी. से पढ़कर उच्च शिक्षा प्राप्त करके नौकरी में मन लगाया। वहां पर जब सिक्का जी का मन नहीं लगा तो अपने व्यापार कार्य में संलग्न हुए और पूर्ण सफलता प्राप्त करते हुए १६५८ में श्रीमती कान्ता सिक्का जी के साथ रहने का संकल्प विवाह के रूप में ले लिया। माता जी का परिवार सच्चा वैदिक धर्मी था। उसी के सारे संस्कार माता जी में आज भी सुरक्षित है। उसी का प्रभाव था जो सिक्का जी जैसे व्यक्ति व्यापारी होते हुए भी पूर्णरूपेण धार्मिक हो गए तथा आपने जंगपुरा विस्तार वाले मकान को यज्ञधाम के रूप में स्थापित कर जनसेवा के हितार्थ धर्माथ औषधालय की भी व्यवस्था कर दी थी। ऐसे थे हमारे कुलपिता श्री कृष्णलाल सिक्का जी जिन्होंने गुरूकुल विद्यालय एवं यज्ञशाला के लिए दान देने में कभी किसी को भी निराश नहीं किया। लेकिन ६ जुलाई २००६ को हम सभी को निराश कर दिया और यशःशरीर की रक्षा करते हुए स्थूल शरीर से सूक्ष्म शरीर वायुलोक में विलीन हो गया। हम सभी कुलवासी, आर्यवीर दल के आर्यवीर, आर्यसमाजों के अधिकारी तथा परिवारों के आत्मीय सदस्यों को कर्मयोगी कर्म करने की प्रेरणा देते हुए आपका प्रत्येक श्वांस सार्थक हो गया। ऐसे माननीय कर्मयोगी के लिए हम सभी अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।

संचालक
गुरूकुल पूठ

वैदिक धर्म प्रचार शिविर सम्पन्न

आर्य जिला प्रतिनिधि सभा शाहजहांपुर द्वारा दिनांक २३, २४, २५ नवम्बर २०१५ को कार्तिक गंगा मेला, ढाई घाट शाहजहांपुर में विश्व कल्याण एवं वैदिक प्रचार शिविर का आयोजन किया गया।

प्रातः ८ बजे से १० बजे तक यज्ञ एवं प्रवचन पूर्वान्ह ११ बजे से सायं ४ बजे तक उपदेश व शंका समाधान सायं ४:३० बजे से ७:०० बजे तक यज्ञ। सायं ७:०० बजे से रात ११ बजे तक भजन, उपदेश व शंका समाधान का आयोजन किया गया।

सृष्टि के समान वेदों की प्राचीनता ईश्वरीय ज्ञान होने का प्रमाण

मनमोहन कुमार आर्य

वेदाध्ययन करते हुए विचार आया कि संसार की भाषा में समयानुसार परिवर्तन होते रहते हैं। एक भाषा का प्रत्यक्ष व परोक्ष प्रभाव दूसरी भाषा पर दूसरी का तीसरी व अन्यों पर पड़ता देखा जाता है। हिन्दी में आजकल लोग अंग्रेजी शब्दों की भरमार कर रहे हैं। फिर क्या कारण है कि वेद सृष्टि के आदि से आज तक अपने मूल स्वरूप में विद्यमान है। वेदों का वर्णन पुराणों, रामचरितमानस आदि नवीन ग्रंथों सहित दर्शन, उपनिषद, महाभारत, रामायण, मनुस्मृति व शतपथ ब्राह्मण आदि में उपलब्ध है। यह वेदों को सृष्टि का आद्य ग्रंथ सिद्ध करते हैं। विदेशी विद्वानों ने भी वेदों को प्राचीनतम ज्ञान की पुस्तक स्वीकार किया है। वेदों का आज जो यथार्थ महत्व देश व विदेश के लोगों को विदित है उसका आधार महर्षि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका आदि ग्रंथों सहित उनका वेदों का भाष्य है। इन व अन्य ग्रंथों को लिखकर महर्षि दयानन्द जी ने न केवल भारत के लोगों अपितु विश्व के मानव समुदान पर महान उपकार किया है। वेदों की महत्ता एवं गौरव वर्णनातीत है, ऐसा हमें लगता है। यदि कोई वैदिक विद्वान हमारी इस बात से सहमत न हो तो वह हमारा उचित मार्गदर्श कर सकते हैं। हमें प्रसन्नता होगी।

वेदों की रचना पर जब हमारा ध्यान जाता है तो ज्ञात होता है कि वेद अधिकांशतः काव्यमय है। गद्य की तुलना में पद्यमय रचना करना कठिन होता है और यह गद्य की तुलना में प्रभावशाली होती है। ऐसा हम सबका अनुभव है। महर्षि बाल्मिकी को रामायण महाकाव्य लिखने के कारण आदि महाकवि माना जाता है। जबकि वह स्वयं वेदों का उल्लेख अपने ग्रंथ में करते हैं। जिससे वह आदि कवि न होकर एक बहुत प्राचीन कवि सिद्ध होते हैं। मनुस्मृति भी अति प्राचीन ग्रंथ है जो महर्षि मनु ने लिखा हुआ है यह ग्रंथ भी काव्यमय है अर्थात् संस्कृत के श्लोकों में रचित है। आदि कवि हमारी इस सृष्टि में यदि कोई है तो वह वेद के ज्ञानदाता व रचयिता है और वह और कोई नहीं इस सृष्टि और हम सब प्राणियों के जन्मदाता परम पिता परमेश्वर ही है। अब वेदों की दूसरी विशेषता पर ध्यान देते हैं तो वेद की भाषा संस्कृत की अनेक विशेषताओं का ज्ञान होता है। संस्कृत की महत्ता तो उन लोगों को अधिक विदित होती है कि जिन्होंने अष्टाध्यायी व निरूक्त पद्धति से संस्कृत का अध्ययन किया है। वेदों में सर्वत्र शब्दों को कई कई शब्दों व पदों की संधियों में प्रस्तुत किया गया है। संधि विच्छेद पर वेद के पदों का अर्थ करने पर ज्ञात होता है कि एक एक शब्द के अनेक अर्थ हैं। वेद के पदों के अर्थ प्रकरणानुसार अपनी अध्ययन सामर्थ्य व यौगिक क्षमताओं के अनुसार किए जाते हैं। अतः वह स्वाभाविक है कि यदि कोई विद्वान प्रकरण को विस्तृत कर देता है तो वह वेद मंत्रों के यथार्थ अर्थ पाठकों तक नहीं पहुंचा सकेगा।

महाभारत काल के बाद से आज तक महर्षि दयानन्द जी की योग्यता वाला व्यक्ति देश या संसार में उत्पन्न नहीं हुआ। अतः वेदों का अध्ययन करते हुए वैदिक पदों से यथार्थ रूप से परिचय होने के साथ महर्षि दयानन्द ने ब्रह्मचर्य योग व समाधि रूपी पुरूषार्थ कर वेद मंत्रों के प्रकरणानुसार जो अर्थ किए है उन्हें देखकर विद्वानों व पाठकों को आश्चर्य होता है। इससे पूर्व अन्य किसी आचार्य व विद्वान के उनकी तुलना में अधिक गहन व देश, समाजोपयोगी अर्थ नहीं मिलते। इस स्थिति को देखकर हमें यह भी विचार आता है कि यदि महर्षि दयानन्द न आये होते और उन्होंने वेदों पर भाष्य आदि कार्य न किया होता तो संसार की कितनी बड़ी हानि व क्षति होती?हमारा अत्यन्त सौभाग्य है कि हमें चारों वेद व उनके भाष्य सुलभ हैं जिसमें सर्वाधिक योगदान महर्षि दयानन्द व उनके अनुयायी शिष्यों का ही है और कुछ कुछ उनके प्रकाशकों सहित हमारे वैज्ञानिकों को भी है जिन्होंने आधुनिक प्रेस व मुद्रण की सुविधाओं के अविष्कार किए हैं। महर्षि दयानन्द के पूर्व उत्पन्न देश व विश्व के निवासियों को वेदों का यह ज्ञान सुलभ न होने से वह हमसे अधिक भाग्यशाली नहीं थे। यही कारण है कि अज्ञानता के काल में संसार के सभी मत-मतान्तर उत्पन्न हुए। आज संसार का कोई मत व विद्वान वेदों की चर्चा कर उसकी मान्यताओं व सिद्धान्तों को झुठलाने का साहस नहीं कर सकता जिससे वेदों की ज्येष्ठता व श्रेष्ठता सिद्ध होती है। महर्षि दयानन्द के काल में तो आजकल की तरह मुद्रण की सुविधायें नहीं थी और उनसे पूर्व ऐसा समय भी देश व संसार में था जब मुद्रण होता ही नहीं था, केवल हस्तलिखित कार्य ही होता था। तब कागज व पेपर भी अच्छी किस्म का नहीं होता था। यह हमारे आधुनिक वैज्ञानिकों की ही देन हैं कि जिसके लिए हम उनका आभार स्वीकार करते हैं।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है या नहीं यह इस बात पर निर्भर है कि वेद सर्व प्राचीन एवं आदि ज्ञान है या नहीं?यदि यह सर्वप्राचीन एवं आदि ज्ञान है तो फिर इसके ईश्वरीय ज्ञान होने में कोई सन्देह नहीं रहता। इसका कारण है कि सृष्टि की आदि में सभी मनुष्य व प्राणी भी बने, बिना ईश्वर के बनाये नहीं बनते। सृष्टि के आरम्भ में न केवल मनुष्य स्त्री व पुरूष अपितु सभी प्रकार के प्राणी भी बने, वनस्पतियां, सूर्य, पृथ्वी, ग्रह व उपग्रह आदि अग्नि, जल, वायु, आकाश आदि सभी पदार्थ जो आज इस पृथ्वी पर हैं बने थे। यह स्वयं अपने आप नहीं बन सकते। यह ईश्वर के द्वारा ही बनाये गये थे व बनाये जाते हैं। कोई भी रचना अपने आप अस्तित्व में कदापि नहीं आ सकती। इसके लिए एक बुद्धिमान, ज्ञान सम्पन्न, शक्तिसम्पन्न व सामर्थ्यवान रचनाकार व निमित्त कारण होना चाहिए। रचनाकार जड़ व निर्जीव कदापि नहीं हो सकता। रचना सदैव चेतन सत्ता जिसमें मनुष्य आदि भी सम्मिलित है, द्वारा ही होती है। रचनायें दो प्रकार की होती है। एक रचना वह होती है जिसे मनुष्य कर सकता है व करता है वह पौरूषेय रचना कहलाती है। दूसरी वह जो मनुष्य नहीं कर सकता। मनुष्यों द्वारा न हो सकने वाली सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी व पृथिवीस्थ पदार्थो की रचना कौन करता है?यह रचनायें ईश्वर के द्वारा होती है। उसे अपौरूषेय रचनायें कहते हैं। सृष्टि की आदि में सृष्टि सभी प्राणियों व वनस्पति जगत आदि की रचनायें ईश्वरीय रचनायें हैं। मनुष्यों को क्योंकि परमात्मा ने ही बनाया है अतः उसे सभी प्रकार का ज्ञान भी ईश्वर से मिलना ही संभव उचित व आवश्यक है। मनुष्य में यह सामर्थ्य भी नहीं है कि वह बिना किसी भाषा को जाने किसी नई भाषा को बना सकें। अतः प्रथम भाषा वेदों की भाषा संस्कृत उसे ईश्वर से ही प्राप्त हुई है। विचार कीजिए कि क्या कोई माता पिता ऐसे भी होते हैं जो अपनी संतानों को जन्म तो दें परंतु उनको अपनी भाषा न सिखायें?यदि माता पिता सन्तानों को जन्म देने के साथ उन्हें अपनी भाषा भी सिखाते हैं तो ईश्वर भी अवश्य सिखाता है। यह तर्कसंगत युक्तिसंगत व संभव कोटि में आता है। यदि ईश्वरीय ज्ञान की भी अपनी एक भाषा है और वह वेदों की संस्कृत है। यदि ईश्वर मनुष्यों को भाषा सहित ज्ञान न दे सकता व देता तो हम अनुभव करते हैं कि ईश्वर मनुष्यों को बनाता ही नहीं। ईश्वर ने संसार व मनुष्य आदि प्राणी बनाये है तो इनको अपने जीवन निर्वाह के लिए भाषा व ज्ञान देना भी उसका कर्तव्य है और वह वेद के रूप में हमारे सामने हैं। वेदों का यह ज्ञान सबसे अधिक प्राचीन है व सब सत्य विद्याओं से युक्त भी है। इसकी सारी बातें सृष्टि क्रम क अनुकूल व ज्ञान-विज्ञान सम्मत हैं। इसी के आधार पर संसार कुछ सौ या कुछ हजार वर्षो से नहीं अपितु महाभारत काल व अद्यावधि तक विगत १,९६,०८,५३,११५ वर्षो से चलता चला आ रहा है। यदि चार वेद ईश्वरीय ज्ञान न होता तो अन्य पुस्तकों की भांति यह कब का नष्ट हो चुका होता। इसका आज अपने मूल स्वरूप में विद्यमान होना भी इसे ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध कर रहा है और यह स्वयं में एक चमत्कार व आश्चर्य ही है। इसके लिए वेद रक्षक सभी ऋषि महर्षियों को सादर नमन है। अतः वेद ही ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध होते हैं।

एक अन्य दृष्टि से विचार करते हैं यदि ईश्वर वेद, सृष्टि, जीव व जीवात्मा, मनुष्य, सूर्य, पृथिवी, ग्रह, अग्नि, आकाश, वायु आदि शब्दों पर विचार करें तो यह सभी शब्द हमें वेदों से ही प्राप्त हुए हैं। वेदों में इन शब्दों को किसने बनाकर रखा है। क्या उन मनुष्यों ने जो भाषा का ज्ञान भी न रखते हों, ऐसे उत्तम शब्दों का विधान व रचना कर सकते थे?कदापि नहीं। मनुष्यों द्वारा की गई कोई भी आरम्भिक रचना अंतिम व निर्दोष नहीं होती। समय के साथ साथ उसमें सुधार होता है। इन शब्दों से पूर्व इसका अन्य कोई स्वरूप था, यह किसी को ज्ञात नहीं और न ही होना संभव है। अतः यह सभी शब्द व समस्त शब्दमय वेद ईश्वरीय देन व उसके द्वारा प्रदत्त व निर्मित है, इसी कारण पूर्ण निर्दोष व सर्वोत्तम है। इससे भी वेद ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध हैं।

हमने वेदों की चर्चा कर उसे यथार्थ ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध किया है। हम चाहते हैं कि जो लोग अपनी धर्म पुस्तक को ईश्वर ज्ञान व प्रेरणा मानते हैं वह वेदों के साथ अपने मत की पुस्तक की तुलना करें तो उन्हें स्वयं ही अन्तर पता चल जायेगा। वेदों में जितने विषयों या सृष्टि क्रम के अनुकूल ज्ञान है उसका आधा व एक तिहाई भी अन्य मतों में उपलब्ध नहीं होता। यह वेदेतर कोई मत अपनी पुस्तक को ईश्वरीय ज्ञान मानता है तो उसमें जो अज्ञान व कुरीतियां विद्यमान है क्या वह भी ईश्वरीय देन हैं?इसका उत्तर हां कदापि नहीं हो सकने के कारण केवल वेद ज्ञान की ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध होता है क्योंकि वेदों में असत्य व अज्ञानमूलक कोई बात नहीं है। हम आशा करते हैं कि निष्पक्ष रूप से लिखे इस संक्षिप्त लेख को पाठक पसन्द करेंगे।

१९६, चुक्खूवाला-२
देहरादून-२४८००१
मोबाइल- ०९४१२६८५१२१

पं. गुरूदत्त विद्यार्थी और ऋषि दयानन्द

ठाकुर महेश सिंह

पं. गुरूदत्त विद्यार्थी का जीवन आर्य समाज के इतिहास का एक परिच्छेद है उसे केवल एक घटना मात्र समझ कर आगे नहीं जाया जा सकता, हम उस होनहार युवक के जीन को उस चमकदार सितारे से उपमा दे सकते हैं। जो रात के अंधियारे में प्रकट होकर सारे अंतरिक्ष को रोशन कर देता है। प्रजा समझने लगती है कि अंधेरी रात का इलाज हो गया पर वह शीघ्र ही मध्यम होने लगता है और जिस फुर्ती से आया था उसी फुर्ती से विलीन हो जाता है। जिन लोगों ने उस जीवन का अनुभव किया वे उसे अपने जीवन पर्यन्त भुला नहीं पाये कारण ये कि वह सिद्धान्तमय जीवन था, एक ध्येय और एक लक्ष्य के लिए उस जीवन की सत्ता थी। ऐसे जीवन को कभी भी सरसरी दृष्टि से देख कर छोड़ा नहीं जा सकता।

पंडित गुरूदत्त विद्यार्थी का जीवन कैसे गुजरा ये एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है। इनका जन्म २७ अप्रैल १८६४ ई. के दिन मुल्तान (जो अब पाकिस्तान का हिस्सा है) में हुआ था इनके पिता का नाम राम कृष्ण था, लाला रामकृष्ण फारसी के बड़े आलिम थे, सूरत शक्ल में गुरूदत्त अपने पिता के फोटो थे। इनके बचपन का नाम मूला था, कुछ बड़े होने पर मूला ने धर्म भक्ति और ज्ञान चर्चा की ओर प्रवृत्ति दिखाई तो इन्हें वैरागी कहकर पुकारा जाने लगा। १२ वर्ष की उम्र में पंड़ित जी ने अपने पिता के साथ हरिद्वार आने का अवसर प्राप्त किया, वहीं स्वामी राधेश्याम ने इस वैरागी का नाम गुरूदित्ता रख दिया, आप जन्म के अरोड़ा थे। आपके पांडित्य, ईश्वर प्रेम और प्रतिभा के चमत्कार को देखकर पीछे से आपके नाम के साथ पंडित का आदर सूचक नाम लगाया जाने लगा। गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था की पहली जीत लाला गुरूदत्त के पंडित गुरूदत्त बनने में हुई।

गुरूदत्त जी के पिता स्कूल मास्टर थे उन्होंने अपने पुत्र को प्राइमरी तक की शिक्षा घर में ही दी, ८ वर्ष की उम्र में आप स्कूल में भर्ती हुए आपने मिडिल परीक्षा झंग से और मैट्रिकुलेशन परीक्षा मुल्तान से पास की। १८८१ ई. में गुरूदत्त जी का स्कूल जीवन समाप्त हुआ। ये जीवन कई अंशों में चमत्कारमय था इतनी सारी विशेषतायें विद्यार्थियों में ही इकठ्ठी होती हैं। पढ़ने में आप तेज थे, अध्यापक और इंस्पेक्टर इस होनहार युवक को देख कर आश्चर्यचकित होते थे, मास्टर लोग प्रश्नों के उत्तर देने में ही उलझ जाते थे, बड़ी श्रेणी के लड़के विद्यार्थी जी से सीखने आते थे, पढ़ने के साथ शारीरिक व्यायाम का कोई संबंध नहीं, परंतु गुरूदत्त जी को विद्यार्थी अवस्था से ही कसरत का खूब शौक था, स्कूल से घर आते हुए लम्बे से लम्बा रास्ता चुनते थे। धार्मिक जीवन की ओर तो इनकी बचपन से ही प्रवृत्ति थी।

मुल्तान में एण्ट्रेंस की परीक्षा की तैयारी के समय गुरूदत्त जी के हृदय में वेद पढ़ने की धुन पैदा हुई और २० जून १८८० के दिन आप आर्य समाज की सभासदी का फार्म लेकर मंत्री जी के पास पहुँचे।

१८८१ ई. के जनवरी मास में गुरूदत्त जी लाहौर के गर्वनमेंट कालेज में भर्ती हुए। मैट्रिकुलेशन की परीक्षा में प्रांत भर में आपका पांचवा स्थान रहा था परंतु अब जो कालेज का जीवन आरम्भ होता है वह उज्ज्वलता में अपना सानी नहीं रखता था। गुरूदत्त जी के विद्यार्थी जीवन के साथी लाला हंसराज दीवान, नरेन्द्र नाथ, लाला शिवनाथ जी, असिस्टेंट इंजीनियर लाला मंगत राम मुंशिफ लाला चेतनानन्द वकील, प्रो. रूचिराम साहनी और लाला लाजपत राय थे सब लोग पंडित जी के केवल कालेज मित्र ही न थे वे उनके धार्मिक ऊहापोह के भी कई अंशों में साथी थे।

कालेज में जाकर प्रतिभाशील युवक को अपनी कुशाग्र बुद्धि का सिक्का जमाते देर न लगती थी, शीघ्र ही प्रोफेसरों तक ने मान लिया कि गुरूदत्त विद्यार्थी साधारण कोटि का तथा साधारण नियमों से ऊपर है। कालेज का दूसरा वर्ष समाप्त होते ही आपका दिमाग पश्चिम के दर्शन और विज्ञान का प्यासा स्टोर बन गया था। जान स्टूअर्ट मिल में आपको बहुत भक्ति थी। ब्रैडला की युक्तियां दिमाग में घुसकर विश्वास की जड़ों को हिलाकर यथोप्याला भरने का यत्न कर रही थीं 'डार्विन' और 'बेन' का आपने खूब पाठ किया और 'मेन्थम' के तत्वाज्ञान को पसन्द किया, एक ओर विकास वाद और दूसरी ओर से अनीश्वर वाद के बलवान आक्रमण विश्वास के किलों की ईट से ईट बजा रहे थे, तब सोचने वाली दुनिया जान स्टूअर्ट मिल' 'स्पेन्सर' और कूम्टे के पीछे पागल थी।

उनके जीवन के १८८१ और ८२ के दो साल नास्तिकता के नहीं बल्कि संशय के साल थे जो लोग इन दो वर्षो को गुरूदत्त के जीवन में नास्तिकता का वर्ष कहते हैं वे भूलते हैं कि इनके स्कूल जीवन में ही श्रद्धा का अंकुर जाग चुका था।

लाला लाजपत राय जी ने पं.गुरूदत्त जी का जो जीवन चरित्र लिखा है उससे प्रतीत होता है कि प्रारम्भ में पंडित जी हमेशा आर्य समाज से विरूद्ध पक्ष लिया करते थे परंतु १८८२ के अंत में उन्होंने आर्य समाज की पुष्टि करना प्रारम्भ कर दिया जिसका परिणाम कि पंडित जी तो विषय के परिमार्जन के लिए विरोधी पक्ष लिया करते थे पर नवयुवकों पर इसका उल्टा असर होता था। १८८३ ई. के अक्टूबर मास में ऋषि दयानन्द की भयानक बीमारी का संवाद देश भर में फैल गया। भक्तों के हृदय कांप उठे, इस समय तक आर्य पुरूषों के लिए वैदिक धर्म का प्रतिनिधि यदि कोई था तो ऋषि दयानन्द। वही उनके आचार्य वही उपदेशक और वही वकील था। आर्य पुरूषों को विश्वास था आदित्य ब्रह्मचारी यदि भीष्म पितामह की भांति ४०० वर्ष तक नहीं तो कम से कम १०० वर्षो तक तो अवश्य ही जीवित रहेगा।

मृत्यु और दयानन्द इन दो शब्दों का आपस में कोई संबंध नहीं ऐसी भावना ही उनके दिलों में नहीं थी। अकस्मात समाचार फैल गया कि अनहोनी की सम्भावना है आदित्य ब्रह्मचारी को किसी ने जहर देकर ग्रहण लगाने की चेष्टा की है ऋषि उस समय अधिक रोगी होकर अजमेर आ गये थे। लाहौर आर्य समाज की ओर से दो प्रतिनिधि ऋषि की दशा को देखने और सेवा करने के लिए रवाना करने का निश्चय हुआ। एक तो लाला जीवनदास जी को चुना गया और दूसरा चुनाव गुरूदत्त जी पर पड़ा। लेकिन दृष्टि से गुरूदत्त जी की बारी बहुत पीछे आती, क्योंकि उन की आयु उस समय मात्र १६ वर्ष थी और कालेज के तीसरे वर्ष में शिक्षा पा रहे थे परंतु प्रतिभा और विश्वास ने उस शख्स को नवयुवक को समाज का वृद्ध बना दिया।

ऋषि के अन्त समय के दृश्य को वैसे तो बहुतों ने देखा मगर जैसा गुरूदत्त जी ने देखा वैसा शायद किसी की भी दृष्टि में न आया, जिज्ञासु ने उस मृत्यु ब्रह्मचर्य के बल को योग की महिमा को और ईश्वर विश्वास की महिमा को देखा उसने देखा कि जिसे लोग वियोग कहते हैं वह एक 'विश्वासी आत्मा' के लिए योग है जिसे साधारण मनुष्य सबसे बड़ा दुख कहते हैं उसे एक योगी प्रिय प्राप्ति का आनन्द समझता है उसने ब्रह्मचारी को मृत्यु के समय आदित्य से अधिक तेजस्वी पर्वत से भी अधिक मजबूत और प्रभात से अधिक आनन्दित देखा। प्रतिभा सम्पन्न आत्मा को जिस चीज की तलाश थी वह मिल गई पंडित गुरूदत्त एक पिपासु आत्मा बन कर और सच्चे विश्वासी आस्तिक बनकर अजमेर से लौटे।

ईश्वरीय नियम अपना बदला लिए बिना नहीं छोड़ते, जो बरसात समय से पहले आ जाती है वह शीघ्र ही समाप्त हो जाती है,पं. गुरूदत्त जी में प्रतिभा समय से पूर्व ही बरस पड़ी थी जिस उम्र में बच्चे गिल्ली डंडा खेलते हैं उसमें गुरूदत्त जी ने प्राणायाम आरम्भ कर दिया था १६ वर्ष की अवस्था का विद्यार्थी पंजाब की आर्य समाज का प्रतिनिधि बनाकर अजमेर भेजा गया था। २४ वर्ष पूरा नहीं हुआ था कि नौजवान एम.ए. का गर्वनमेंट कालेज में साइंस का बड़ा अध्यापक नियुक्त कर दिया जाता है। कदम कदम पर कुदरत का नियम टूटता दिखाई देता था। फिर पंडित जी ने भी नियम तोड़ने में कोई कसर न छोड़ी, कार्य के धुन में शरीर की भी चिन्ता छोड़ दी आप जब वैदिक मैगजीन लिखने बैठते थे तो कई दिनों तक घर से बाहर नहीं निकलते थे। तब ४८ घंटे तक एक मिनट भर बिना नींद लिए लिखते चले जाते थे, जब सोने की धुन सवार होती थी तब २४ घंटे की इकठ्ठी समाधि लगती थी, इस प्रकार के अतिक्रमण से लोहे का शरीर भी अस्त व्यस्त हो सकता है। इन सब कारणों से आर्य समाज की आशाओं के केन्द्र इस होनहार नवयुवक को क्षय रोग (टी.बी.) ने आ घेरा। १८८६ के मध्य पंडित जी के भक्त और मित्रों को मालूम हुआ कि आप बीमार है तो भक्तों ने अपनी सदिच्छाओं और सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ी, डाक्टरी, युनानी, आयुर्वेदिक सभी तरह के इलाज किए गये परंतु रोग बढ़ता ही गया, देखने वालों ने देखा कि आप बीमारी की दशा में भी शान्त रहे, उफ भी नहीं की, आप प्रायः ईश्वर की प्रार्थना किया करते थे जब अन्त समय समीप आया तब आपने अंतिम हवन कराया स्वयं वेद मंत्रों का उच्चारण किया। १६ मार्च १८८४ ई को प्रभात के ७ बजे ऋषि दयानन्द के सच्चे शिष्य ने ईश्वर का स्मरण करते हुए बड़ी शांति से प्राणों का परित्याग किया। पं. गुरूदत्त विद्यार्थी २७ वर्ष की आयु में इस लोक से प्रयाण कर गये परंतु वे अपने पीछे स्वार्थ त्यागी वेद भक्त उद्यमी आर्य वीरों की एक सन्तति छोड़ गये।

आ.प्र.सभा, सिठौली,
बदायूं
मो. ०९३६८१२६५३४

सभी दुखों का मूल - पंच क्लेश

प्रताप कुमार 'साधक'

सभी जीव सुख चाहते हैं। दुःख कोई नहीं चाहता, किंतु भोगना पड़ता है। जैसे कोई जीव बन्धन में आना नहीं चाहता किंतु आना पड़ता है। बंधन में आने का कारण कर्माशय है और कर्माशय का मूल हैं क्लेश। योगदर्शन में बतलाया गय है ''क्लेशमूलः कर्माशयो दृष्टादृष्ट जन्मवेदनीयः।'' अर्थात् क्लेश ही जिसका मूल है, वह कर्माशय वर्तमान और भावी जन्मों में घुमाकर दुख देने वाला है। योगदर्शन, साधन पाद में पांच क्लेशों का वर्णन प्रधान क्लेश हैं- ''अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पंच क्लेशाः।'' इन में अविद्या प्रधान क्लेश है, जो शेष चारों क्लेशों की जननी है। ''अविद्या क्षेत्रमुत्तरेषां प्रसुप्ततनुविच्छिन्नोदाराणाम्।'' महर्षि दयानन्द सरस्वती ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के मुक्ति विषय में लिखते हैं - ''उनमें से अस्मितादि चार क्लेशों और मिथ्या भाषणादि दोषों की माता अविद्या है जो कि मूढ़ जीवों को अंधकार में फंसा के जन्ममरणादि दुख सागर में सदा डुबोती है।''

अविद्या क्या हैं? क्या उच्च शिक्षा प्राप्त करके अविद्या से मुक्त हुआ जा सकता हैं?नहीं?योगदर्शन के अनुसार ऊँची से ऊँची डिग्रियों को प्राप्त कर लेने से ही कोई मनुष्य विद्वान नहीं हो सकता। उसके लिए अविद्या (जिसे विर्ण्यय ज्ञान कह सकते हैं) को नष्ट करना अनिवार्य शर्त हैं। अविद्या की परिभाषा योग दर्शन द्वितीय पाद के सूत्र-५ में दी गई हैं- ''अनित्याशुचि दुःखनात्मसु नित्यशुचि-सुखात्मख्यातिरविद्या।'' अर्थात् अनित्य (विनाशशील) को नित्य (अविनाशी) मानना, अशुचि (अपवित्र) को शुचि (शुद्ध) मानना दुख को सुख तथा अनात्म तत्व (जड़) को आत्म तत्व (चेतन) मानना अविद्या है।'' जिससे पदार्थो का यथार्थस्वरूप बोध होवें वह विद्या और जिससे तत्वस्वरूप न जान पड़े अन्य में अन्य बुद्धि होवे वह अविद्या कहलाती हैं। (सत्यार्थ प्रकाश- नवम् समुल्लास) धन सम्पत्ति तथा नश्वर शरीर आदि सदा न रहने वाले अनित्य पदार्थ हैं। किंतु सांसारिक व्यक्ति इन्हें सदा बनाये रखना चाहता है, अतः पूरा जीवन इन्हीं के उपार्जन तथा रक्षण में व्यतीत कर देता है। नष्ट होने या छिन जाने पर दुखी होता है, अपने भाग्य को कोसता है। यही अनित्य को नित्य समझना रूपी अविद्या है। अपना या किसी अन्य का शरीर अस्थि, मांस, रक्त आदि अशुद्ध पदार्थो से बना होता है इसमें मल मूत्रादि दूषित पदार्थ सदैव रहते हैं। किंतु मनुष्य इसे शुद्ध समझता है, इसे ही सजाने संवारने में लगा रहता है और काम के वशीभूत होकर इसे चूमता चाटता है। हिंसा, चोरी, रिश्वत आदि अनुचित साधनों से कमाया हुआ धन भी अपवित्र होता है। अंडा, मांस, मछली आदि अपवित्र होते हैं, किंतु इन का सेवन करने वाला इन्हें अपवित्र नहीं समझता। यही अविद्या है।

संसार का कोई भी पदार्थ शुद्ध तथा स्थायी सुख देने वाला नहीं है। जो भी सुख समझा जाता है वह अस्थायी क्षणिक होते हैं तथा उसमें चार प्रकार के दुख मिले होते हैं।(परिणाम ताप संस्कार दुःखैर्गुणवृत्ति विरोधाच्च दुःखमेव सर्वविवेकिनः) सुख साधनों से राग, इनमें बाधा डालने वालों के प्रति द्वेष और शत्रुता जनित हिंसा, भोग के कारण शारीरिक व्याधियां और मन-इन्द्रियों की चंचलता, और अधिक भोग पाने पर मानसिक अशांति ये सभी भोगकाल में भी दुख के कारण होते हैं, कर्मफल रूपी दुख तो इनके अतिरिक्त भोगना पड़ता है। ये सभी 'परिणाम दुख' कहलाते हैं।

सुख भोग में बाधा डालने वालों के प्रति द्वेष होता है, जिससे क्रोध उत्पन्न होता है। यदि बाधक को न हटा सके या उसे हानि न पहुंचा सके तो सन्ताप होता है। विषय सुख को भोगते हुए भी यदि उस सुख में (पूर्व में) बाधा डालने वाले का स्मरण आ जाए तो सुख काल में भी दुख उभर आता है। ये सभी अन्तःकरण को जलाते रहने वाले ताप दुख हैं।

सुख भोगने से सुख के संस्कार बनते हैं। कालान्तर में उस वस्तु को पुनः दर्शन या स्मरण से उसके प्रति राग उत्पन्न होता है। इससे व्यक्ति पुनः पुनः वैसा ही सुख पाना चाहता है। यदि वैसा सुख न मिल सके तो दुख होता है। साथ ही व्यक्ति भोगों में लिप्त होता चला जाता है, फिर भी अतृप्त बना रहता है। मनुस्मृति में कहा गया है- ''न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति। हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते।।'' अर्थात् विषय सुखों के भोग करने से वे कभी शांत नहीं होते, अपितु उनसे भोगेच्छा उसी प्रकार बढ़ती रहती है जैसे घृताहुति से अग्नि बढ़ती है। इसे ही संस्कार दुख कहते हैं।

इनके अतिरिक्त गुणवृत्ति विरोध दुख होता है। वस्तुतः त्रिगुणात्मक प्रवृत्ति का विकार होने से चित्त में तीनों गुण सदैव बने रहते हैं, जबकि इनके प्रभाव परस्पर विरोधी होते हैं। जैसे- सत्त्व गुण से शांति, रजोगुण से चंचलता और तमोगुण से मूढ़ता होती है, अतः एक के प्रबल होने पर शेष दो भी प्रभावी बने रहते हैं। अर्थात् सुख काल में भी दुख की अनुभूति होती है।

अविद्या का चौथाकरण अनाल (जड़) पदार्थ को आत्म (चेतन) समझना है। जड़ मूर्ति, वृक्ष, नदी, कब्र आदि को चेतन मानकर उन्हें मिष्ठान्न, जल, वस्त्रादि भेंट करना तथा उनसे धन, सम्पत्ति, पदवी, सफलता आदि की प्राप्ति चाहना अविद्या है। इसी प्रकार जड़ शरीर मन, इन्द्रियों को चेतन मानना भी अविद्या है। जीवात्मा जब प्रकृति के साथ अविद्या जनित संबध बना लेता है तब वह संस्कारों की पूर्ति के लिए शरीर के बंधन में आता है और दुखों के जाल में फंसा रहता है।

दूसरा क्लेश है अस्मिता। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के 'मुक्ति विषय' में लिखा है- ''दूसरा क्लेश अस्मिता कहलाता है, अर्थात् जीव और बुद्धि को मिले हुए के समान देखना, अभिमान और अहंकार से अपने को बड़ा समझना इत्यादि व्यवहार को अस्मिता जानना। जब सम्यक विज्ञान से अभिमान आदि के नाश होने से इसकी निवृत्ति हो जाती है तब गुणों के ग्रहण में रूचि होती है।'' वस्तुतः जीवात्मा चेतन, अपरिणामी, कर्ता और भोक्ता है, जबकि बुद्धि (मन, इन्द्रिय, शरीर) जड़ परिणामी जीवात्मा के करण (साधन) मात्र है, किंतु अविद्या के कारण अनात्मा (बुद्धि) और आत्मा में एकरूपता सा अनुभव होता है, जैसे- शरीर के अस्वस्थ होने पर यह समझना कि मैं अस्वस्थ हूँ, शरीर के सुन्दर रहने पर यह समझना कि मैं सुन्दर हूँ अस्मिता नामक क्लेश हैं।

राम तीसरा क्लेश है। 'अस्मिता' के कारण मन, इन्द्रियों और शरीर में आत्मभाव पैदा हो जाता है, अतः इनके सुख की लालसा बनी रहती है। सुख प्राप्ति में बाधा उत्पन्न होने पर दुख होता है। योगदर्शन के अनुसार सुख भोगने के पश्चात अन्तःकरण में सुख और सुख साधनों के प्रति रहने वाली इच्छा, लालसा और लोभ को राग कहते हैं। इसका कारण भी अविद्या ही है। राग के कारा व्यक्ति सांसारिक भोगों में फंसता चला जाता है।

जिस प्रकार सुख भोगने के पश्चात उन भोगों को पुनः प्राप्त करने की इच्छा, आसक्ति को राग कहते हैं, उसी प्राकर दुख भोगने के पश्चात दुख और उसके साधनों के प्रति रहने वाली जो विनाश की इच्छा, क्रोध आक्रोश होता है, वह द्वेष कहलाता है। अतीत में जो दुख मिल चुका होता है उसे याद करने से भी दुख होता है, जबकि वर्तमान का दुख तो कष्ट देता ही है। इनसे बचने का उपाय योगदर्शन में बतलाया गया है- ''हेयं दुखमनागतम्।'' अर्थात् जो दुख बीत चुके हैं, उन्हें याद करने से लाभ नहीं जो प्राप्त हो रहे हैं, वे समाप्त हो ही जायेंगे। केवल भविष्य में प्राप्त होने वाले दुखों पर ही विचार करना चाहिए। राग का जो कारण है वहीं द्वेष का भी कारण है, अर्थात् सांसारिक पदार्थो व व्यक्तियों से अधिक लिप्तता ही द्वेष भी उत्पन्न करती है। व्यक्ति की असीमित अभिलाषायें कभी पूर्ण नहीं हो सकती, अतः संतोष भाव रखने तथा सभी प्राणियों को आत्मवत् मानने से द्वेष की समाप्ति हो सकती है।

पांचवा क्लेश 'अभिनिवेश' है। प्राणियों में विद्यमान मृत्यु का भय ही अभिनिवेश है। इसका भी प्रधान कारण अविद्या है, जो अनित्य शरीरादि को नित्य समझने से होता है। उपरोक्त पांचों क्लेशों को समझकर उन्हें समाप्त करना और मोक्षानन्द को प्राप्त करना ही मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य है।

उपरोक्त पांचों क्लेशों की चार अवस्थायें योगदर्शन में बतलाई गयी हैं- प्रसुप्त, तनु, विच्छिन्न और उदार। सामान्य जनों में क्लेश उदार रूप में रहता है, जो निरन्तर बना रहता है। ज्ञानी व्यक्तियों में क्लेश विच्छिन्न दशा में रहता है, जो कभी दब जाता है, तो कभी प्रकट हो जाता है। ऐसा परिस्थितियों के कारण होता है। योगसाधक में क्लेश 'तनु' अर्थात् सूक्ष्म रूप में हो जाता है, जो सामान्य उत्प्रेरक के सम्मुख होने पर तो नही उभरता किंतु उत्प्रेरकों के बार बार सम्मुख आने पर साधक यदि सावधान न हो तो उदार अवस्था को प्राप्त हो जाता है। ऐसे अनेकों उदाहरण मिलेंगे जहां महात्मा संत और योगी भी क्लेशों के वशीभूत हो पथ भ्रष्ट हो गये हों। ऐसी स्थिति से बचने के लिए योगदर्शन, साधन पाद के प्रथम दो सूत्रों में ही उपाय बतला दिया गया है - ''तपः स्वाध्यायेश्वर-प्राणिधानानि क्रियायोगः। समाधिभावनार्थः क्लेशतनूकरणार्थश्च।'' अर्थात् तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान मिलकर क्रियायोग कहलाते हैं, जिन्हें निरन्तर अपनाने से क्लेश तनु अवस्था में बने रहते हैं (उदार अवस्था को प्राप्त नहीं होते) क्लेशों का चित्त में केवल बीजरूप से पड़े रहना 'प्रसुप्त' अवस्था कहलाती है। जैसे विविध प्रकार के बीज भूमि में अदृश्य पड़े रहते हैं, किंतु अनुकूल मौसम आने पर अंकुरित हो जाते हैं। इसी प्रकार व्यक्ति के चित्त में जन्म जन्मान्तर की वासनाएं विद्यमान रहती है, जो अनुकूल उद्बोधक कारण उपस्थित होने पर उद्बुद्ध हो जाती हैं। जैसे अग्नि में भुना हुआ बीज अंकुरित हो पाने में असमर्थ होता है वैसे ही योगाग्नि द्वारा क्लेशों को 'दग्धबीज' कर देने पर वे उद्बुद्ध नहीं हो पाते। ऐसा योगी जीवन्मुक्त हो जाता है, मृत्युंजय हो जाता है।

अतएव क्लेशों से मुक्ति पाना ही दुखों से मुक्ति पाना है। सांख्य दर्शन के अनुसार - अथ त्रिविध दुःखात्यन्त निवृत्तिरत्यन्त पुरूषार्थः।

मो.- ६४५०००१४४१

आर्यो सम्भल जाओ अन्यथा पछताओगे

पं.नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य

हमारा प्यारा आर्यावर्त (भारत) किसी समय समस्त संसार का स्वामी था। सकल विश्व में भारत की महिमा के गीत गाए जाते थे। संसार भारत को देवभूमि मानकर इसके आगे शीष झुकाता था, वस्तुतः सारे जगत में आर्यो का चक्रवर्ती राज्य था तथा सारी दुनिया के नर-नारी प्रातः उठकर परमात्मा से प्रार्थना करते थे कि हे सकल विश्व के रचने वाले जगदीश्वर! हमें दूसरा जन्म ऋषियों की भूमि आर्यावर्त में देने की कृपा करना जिससे हम सब वेदवेता त्यागी तपस्वी ईश्वर भक्त धर्मात्मा परोपकारी ऋषियों के चरणों में बैठकर वैदिक ज्ञान प्राप्त करके अपने इस मानव तन को सफल करके मोक्ष की प्राप्ति कर सके। उस समय आर्यो की समस्त संसार में धाक थी। विद्वान कहते हैं कि उस समय भारतवासी देवता माने जाते थे।

इस देश में सत्यवादी हरिश्चन्द्र, अश्वपति राम भोज, चन्द्रगुप्त, विक्रमादित्य जैसे ईश्वर भक्त धर्मात्मा प्रजापालक सम्राट थे जो जनता को पुत्र की तरह हृदय से प्यार करते थे। यह क्रम महाभारत काल तक चलता रहा किंतु महाभारत के युद्ध के पश्चात यहां वैदिक विद्वानों की कमी हो गई थी, रही सही हमारी प्रतिष्ठा आपस की फूट ने खत्म कर दी। जिससे यह देश लगभग एक हजार वर्ष तक विधर्मी मुसलमानों और ईसाइयों के हाथों पराधीन रहा जिन्होंने यहां रात दिन भारी अत्याचार किए। विधर्मी लोगों ने हमारे धर्म ग्रंथ जला दिये लाखों देशभक्तों की हत्या करवाई तथा दुष्टों ने हमारी बहन बेटियों का धर्म नष्ट किया।

जगत पिता जगदीश्वर की कृपा से इस देवभूमि में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने टंकारा में कर्षण जी तिवारी के घर माता यशोदाबाई की कोख से जन्म लिया जिनका बालपन का नाम मूलशंकर था। स्वामी दयानन्द जी ने स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से सन्यास लिया तथा गुरू विरजानन्द सरस्वती से मथुरा नगरी में वेद ज्ञान प्राप्त किया। स्वामी जी ने गुरू देव की आज्ञा मानकर भारत भर में वैदिक धर्म का प्रचार किया । इस कार्य को करने में उनके सामने भारी दिक्कतें आई लेकिन वे कभी भी नहीं घबराये। उन पर ईट पत्थर बरसायें गये। गोबर कीचड़ फेंका गया और घातक हमले किए गये। वे हर प्रकार विधर्मियों का डटकर मुकाबला करते रहे।

स्वामी जी ने सबसे पहले पोंगापंथी पौराणिकों पर हमला किया तथा स्पष्ट किया कि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान हैं। वेदों के विरूद्ध जितने भी ग्रंथ हैं सब कपोल कल्पित हैं तथा मूर्तिपूजा वेद विरूद्ध हैं। उन्होंने काशी, मथुरा, हरिद्वार, जगन्नाथ, अमरकोट आदि स्थानों पर जाकर वेद प्रचार करके पाखण्डी लोगो को परास्त किया। इसके बाद मुल्ला मौलवियों को तथा पोप पादरियों को शांस्त्रार्थ में हराया। स्वामी जी ने अपने महान ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में तेरहवां व चौदहवां समुल्लास ईसाइयों व मुसलमानों को झूठा व पाखण्डी प्रमाणित करते हुए लिखे। बौद्ध और जैनमत का खण्डन किया। उस समय उनसे कोई भी विधर्मी विजय प्राप्त न कर सका। वस्तुतः वे अजेय योद्धा माने गये। संसार उन्हें श्रद्धा से याद करता है।

स्वामी जी ने घोषणा की कि संसार में कर्म ही प्रधान है, जो व्यक्ति जैसा कर्म करता है ईश्वर उसे वैसा ही फल देता है। उन्होंने वेदों के प्रमाण देते हुए ईश्वर को निराकार सर्वव्यापक अजन्मा अनादि अनुपम सर्वज्ञ अजर अमर न्यायकारी दयालु बताया तथा दृढ़तापूर्वक कहा कि ईश्वर कभी अवतार नहीं लेता क्योंकि वह सर्वशक्तिमान है इसलिए उसे जन्म धारण करने की जरूरत नहीं है।

स्वामी जी ने जन्म जाति को गलत बताया तथा घोषणा की कि जो व्यक्ति ब्राह्मण के घर में जन्म लेकर वेद विरूद्ध कार्य करता है वह शूद्र से भी नीची कोटि में चला जाता है तथा संसार में दुष्ट की पदवी पाता है। तथा जो व्यक्ति शूद्र के घर में जन्म लेकर भी अच्छे कर्म करके विद्वान ईश्वर भक्त बन जाता है वह ब्राह्मण की पदवी पाता है।

स्वामी जी ने गऊ को माता बताया तथा गोकरूणा निधि लिखकर गऊ का महत्व बताया। स्वामी जी ने विदेशी राज्य को दुखदाई व स्वदेशी राज्य को सुखदाई बताया। उन जैसा त्यागी, तपस्वी ईश्वर भक्त धर्मात्मा सदाचारी तपधारी साधु संसार में अब तक कोई और नहीं आया। आर्यो! आपस की लड़ाई बंद करो और महर्षि दयानन्द महाराज की शिक्षाओं को मानो और वेद प्रचार करके संसार का काया कल्प कर दो अन्यथा पछताते रह जाओगे।

अंत में मेरी सबसे यही प्रार्थना है।

आर्यकुमारो विश्व में करो वेद प्रचार।
देव पुरूष बनकर करो जगती का उद्धार।
याद रखो संसार में जो करते शुभ कर्म।
वही पालते है सुनो पावन वैदिक धर्म।।

आर्य सदन,
वहीन जनपद पलवल

वेद प्रचार शिविर का आयोजन

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद बदांयू में पवित्र मंदाकिनी नदी के तट पर प्रतिवर्ष होने वाले ''लघु कुम्भ'' नामक विख्यात मेला फकोड़ा में दिनांक २४, २५, व २६ नवम्बर २०१५ को वेद प्रचार शिविर का अयोजन किया गया।

इस अवसर पर अनेक वैदिक विद्वान, परिव्राजक, उपदेशक तथा समाज सेवियों ने उपस्थित होकर धर्मप्रेमी लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रातः यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें वेद के पवित्र मंत्रों के द्वारा राष्ट्र रक्षा एवं विश्व मंगल की कामना की गयी।

मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, बदांयू

आर्य समाज सदर बाजार झांसी द्वारा ऋषि निर्वाण पर्व पर गायत्री यज्ञ

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आश्विन पूर्णमासी से कार्तिक अमावस्या तक तदानुसार दिनांक २७ अक्टूबर २०१५ से १२ नवम्बर तक आर्य समाज सदर बाजार झांसी में ऋषि निर्वाण पक्ष में गायत्री यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें प्रतिदिन प्रातः ७ बजे से ८:३० बजे तक विभिन्न यजमानों के यज्ञमानत्व में गायत्री यज्ञ का आयोजन किया गया। अंतिम दिवस १२ नवम्बर को प्रातः काल ७ बजे से ११ बजे तक यज्ञ की पूर्णाहुति की गयी। इस आयोजन के आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री जी तथा आर्य पुरोहित श्री देवव्रत आर्य थे। पूर्णाहुति श्री वीरेन्द्र शास्त्री जी ने कराई। अंत में ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। इस आयोजन में झांसी नगर के अतिरिक्त झांसी जिले की सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने प्रतिभाग किया तथा सत्संग और ऋषि लंगर का पुण्य लाभ अर्जित किया। इस सम्पूर्ण आयोजन में श्री सतीश चौधरी ने मधुर भजन प्रस्तुत किए तथा पूर्णाहुति के दिन डा. (श्रीमती) दीप्ति गुलाटी जी ने भी भजन की प्रस्तुति दी।

आयोजन सभा का सफल संचालन महिला आर्य समाज सदर बाजार झांसी की प्रधाना श्रीमती सुभाष रानी किन्द्रा निवर्तमान प्रधानाचार्या कस्तूरबा कन्या इण्टर कालेज झांसी ने किया। आयोजन को सफल बनाने में आर्य समाज सदर बाजार झांसी के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों विशेषकर प्रधान श्री विनोद अग्रवाल मंत्री श्री सुदर्शन कथूरिया, कोषाध्यक्ष श्री प्रकाश चन्द्र भाटिया महिला आर्य समाज की मैत्राणी श्रीमती ज्योत्सना भाटिया, कोषाध्यक्ष श्रीमती निर्मला आर्या का विशेष सहयोग रहा।

वेदारीलाल आर्य
५८, हाता प्यारे लाल
नगरा- झांसी

सम्पादक के नाम पत्र

माननीय श्रीमान नरेन्द्र मोदी जी
प्रधानमंत्री
भारत सरकार

विषय- एकल बालिका पोस्ट ग्रेजुएट छात्रवृत्ति के संदर्भ में

महोदय,

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा विभिन्न छात्रवृत्तियां छात्रों को प्रदान की जाती है जो उनको आगे पढ़ने में अहम भूमिका निभाती है। इस अतुल्य छात्र सहयोग के लिए आयोग बधाई का पात्र है। आयोग द्वारा एक छात्रवृत्ति एकल बालिका पोस्ट ग्रेजुएट के नाम से प्रदान की जाती है जो कि अपने माता की अकेली लड़की हो। इस छात्रवृत्ति के विषय में आपसे प्रार्थना है कि इस छात्रवृत्ति में एक लड़की का नियम हटाकर सभी लड़कियों के लिए कर देना चाहिए। मुझे लगता है कि जिस माता पिता के दो या तीन लड़कियां है उसको क्यों यह छात्रवृत्ति नहीं दी जा रही है। ग्रामीण अंचल में एक लड़की को तो व्यक्ति पढ़ा सकता है परंतु दो या तीन होने पर उसके सामने आर्थिक परेशानी हो जाती है और लड़की की पढ़ाई रूक जाती है यदि यह छात्रवृत्ति सभी को कर दी जाए तो इससे लाखों लड़कियों को अपने सपने साकार करने में मदद मिलेगी तभी हम अपने ''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'' अभियान को सार्थक कर शास्त्रोक्त पंक्ति को ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' को चरितार्थ कर सकते हैं। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप लाखों लड़कियों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए उचित कार्यवाही कर अनुगृहीत करेंगे। इसी आशा और विश्वास के साथ

आपका अपना

प्रतिलिपि-
माननीय प्रधानमंत्री भारत सरकार
माननीय मंत्री जी मानव संसाधन विकास
अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२४४१/५७ - आर्यमित्र ०८ दिसम्बर, २०१५ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४-२०१६-१८

एक प्रति ₹ २ ००

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्स:०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६८३७४०२१६२, सम्पादक-६५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

.....

छात्रवृत्ति एवं अभिनन्दन समारोह का सफल आयोजन

मानव सेवा प्रतिष्ठान नार्थ अमेरिकन जाट चैरिटी एवं जाट मित्र मण्डल के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक २५ अक्टूबर को चौधरी छोटू राम भवन केशव पुरम् दिल्ली में छात्रवृत्ति एवं अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें आर्य जगत के नौ विद्वान विदुषियों का सम्मान किया गया जिसमें पं. सत्यपाल पथिक अमृतसर, स्वामी सुधानन्द योगी अलवर, डा. सरिता आर्या कन्या गुरूकुल ऐंचरा कलां जींद, डा. कमलेश आर्या नजीबाबाद, श्री रणजीत जी आर्य उड़ीसा, आचार्या सुमन आर्या हरिद्वार, श्री बुद्धदेव शास्त्री उड़ीसा, महात्मा वेदपाल आर्य हरियाणा, श्रद्धेया पूनम शास्त्री उत्तरकाशी को सम्मानित किया गया।

इसके अलावा १२५ विभिन्न शिक्षण संस्थाओं, गुरूकुलों के छात्र-छात्राओं को ७ लाख रूपये की सहयोग राशि दी गयी।

कार्यक्रम के अंत में ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

डा. कंवर सिंह, महामंत्री

आर्य समाज बांगरमऊ का 44वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बांगरमऊ, उन्नाव का ४४वां वार्षिकोत्सव दिनांक १५ नवम्बर से १६ नवम्बर २०१५ तक जी.पी. पैलेस सण्डीला रोड, बांगरमऊ उन्नाव में बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में प्रातः ७:३० बजे से ११:३० बजे तक यज्ञ, भजन व प्रवचन सायं ६:३० से रात्रि १०:०० बजे तक भजन व उपदेश तथा दिनांक १६ नवम्बर को ''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'' महारैली का आयोजन किया गया।

गरबा उत्सव में आर्य समाज का वेद प्रचार

गुजरात समाज सभा भवन कोटा, राजस्थान में नवरात्रि के अवसर पर २२ अक्टूबर २०१५ को गरबा उत्सव में आर्य समाज कोटा द्वारा गुजराती भाषा में वैदिक साहित्य का वितरण जिला प्रधान श्री अर्जुन देव चड्ढा द्वारा किया गया। जिसमें उन्होंने सर्वप्रथम गुजराती समाज के अध्यक्ष श्री निलेष भाई पटेल को भेंट किया।

वैदिक साहित्य में सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, उपनिषद, आदि को गुजराती भाषा में छपवा कर लोगों को वितरित किया।

कार्यक्रम के संयोजक श्री अरविन्द कुमार पाण्डेय जी थे।

अर्जुन देव चड्ढ़ा द्वारा वस्त्र वितरण

आर्य समाज कोटा जिला सभा के प्रधान एवं पंजाबी समाज समिति के अध्यक्ष श्री अर्जुन देव चड्ढ़ा द्वारा दिनांक ०३ नवम्बर २०१५ को कोटा के दादाबाड़ी मेन चौराहा स्थित कच्ची बस्ती में गरीब बच्चों, महिलाओं एवं पुरूषों को नवीन वस्त्रों का वितरण किया।

उनके साथ पंजाबी जन सेवा समिति के महासचिव श्री दर्शन पिपलानी, संयुक्त सचिव श्री उपदर्शन सिंह आदि भी मौजूद थे।

गुरूकुल आश्रम आमसेना का गौरव

प्रसिद्ध आर्य सन्यासी पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती के अनथक परिश्रम एवं तप, त्याग से अब आर्य समाज के गुरूकुलों में गुरूकुल आश्रम आमसेना का प्रमुख स्थान है। इस गुरूकुल के छात्रों के सर्वविध विकास के लिए विशेष प्रयत्न किया जाता है। फलस्वरूप यहां के ब्रह्मचारी बौद्धिक एवं शारीरिक विकास में आगे रहते हैं।

ओडिशा के प्रान्तीय कुश्ती दंगल में गुरूकुल के तीन ब्रह्मचारी लोकेश्वर आर्य एवं ऋषिकेश आर्यने ६५ किग्रा वजन में क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया। ब्र.बलदेव आर्य ने ७५ किग्रा वजन में तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इसी प्रकार भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की ओर से ओडिशा प्रांतीय शास्त्र प्रतियोगिता पुरी में आयोजित प्रतियोगिता में महाभाष्य में ब्र. स्वराज्य आर्य, धातुरूप में ब्र. मित्रभानु आर्य अष्टाध्यायी कण्ठस्थीकरण में ब्र.रूपेश आर्य ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इस प्रकार इस शास्त्र प्रतियोगिता में गुरूकुल के होनहार तीनों ब्रह्मचारियों ने प्रथम स्थान प्राप्त करके गुरूकुल का गौरव बढ़ाया।

आचार्य मनुदेव वाग्मी
प्रबंधक

यजुर्वेद यज्ञ महोत्सव का समापन

दिनांक २१-११-१५ से चार दिवसीय यजुर्वेद यज्ञ आचार्य बिजेन्द्र जी ब्रह्मत्व में हरियाणा धर्मशाला गगाहे सहारनपुर में उल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ। यज्ञ के यजमान श्री सत्यपाल सिंह व श्री यशपाल सिंह सपत्नीक थे।

वेद प्रचार शिविर

आर्य उप प्रतिनिधि सभा सम्भल व जनपद की समस्त आर्य समाजों के सामूहिक प्रयास से कार्तिक गंगा मेला सिसौना डांडा सम्भल में दिनांक २३-११-१५ से २६-११-१५ तक वेद प्रचार शिविर का विशाल आयोजन किया गया।

शिविर में प्रातः ५ बजे से ७ बजे तक योग प्रशिक्षण, प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक यज्ञ, वेदोपदेश तथा भजन दोपहर २ बजे से ५ बजे तक प्रवचन, भजन रात्रि ७:३० से १०:३० तक प्रवचन व भजन हुए। जिसमें समाज सुधार, राष्ट्र रक्षा, विश्व शांति और वेद, स्वदेशी, गौरक्षा आदि विषयों पर भी परिचर्चा हुई।

आर्य समाज मारतहल्ली बंगलौर भूमि पूजन शिलान्यास सम्पन्न

दिनांक १८-१०-१५ को बंगलौर शहर की तीसरी आर्य समाज मारतहल्ली के नव निर्माण हेतु भूमि पूजन व शिलान्यास का कार्यक्रम आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान आचार्य राजदेव शास्त्री संचालक आर्ष गुरूकुल ऐरवा कटरा (औरैया) की देखरेख में फकीरे दयानन्द एस.पी.कुमार जी के सौजन्य से सम्पन्न हुआ। भवन निर्माण हेतु लोगों द्वारा मुक्त हस्त से दान की घोषणा की।

सर्वप्रथम आचार्य रामतीर्थ शास्त्री जी ने पावन यज्ञ कराया तदुपरांत श्री शाह जी रघुवीर बहादुर कुमार जी द्वारा भूमिपूजन किया गया। आदरणीय कुमार जी ने भवन निर्माण हेतु १५ लाख का सात्विक दान भी दिया।

गुरूकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल मुजफ्फरनगर का 51वाँ वार्षिक महोत्सव हर्षोल्लास से सम्पन्न

गुरूकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल मु.नगर, उ.प्र. का ५१वां वार्षिकोत्सव दिनांक २२ नवम्बर से २५ नवम्बर २०१५ तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

आर्य समाज फरीदकोट (पंजाब) का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मंदिर फरीदकोट (पंजाब) का वार्षिकोत्सव दिनांक ४ दिसम्बर से ६ दिसम्बर २०१५ तक हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा। जिसमें प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक यज्ञ, भजन व उपदेश सायं ५ बजे से रात्रि ८ बजे तक यज्ञ, भजन व उपदेश होंगे। पूर्णाहुति ६ दिसम्बर को प्रातः होगी, उसी दिन दोपहर १२:३० बजे से ऋषि लंगर रखा गया है।

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।